पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय में पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारंभ

जबलपुर। आज दिनांक 03 फरवरी 2025, नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय के पशु चिकित्सा विज्ञान एवं पशुपालन महाविद्यालय, जबलपुर स्थित पशु परजीवी विज्ञान विभाग में पांच दिवसीय (3 से 7 फरवरी 2025) प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न जिलों से आए 20 कार्यरत पशु चिकित्सा अधिकारियों को संक्रामक पशु रोगों के निदान हेतु पारंपरिक एवं आधुनिक तकनीकों की विस्तृत जानकारी प्रदान करना है। इससे वे अधिक सटीक, त्वरित और प्रभावी तरीके से रोगों की पहचान और उपचार कर सकेंगे, जिससे प्रदेश के पशुपालकों को प्रत्यक्ष लाभ मिलेगा। पशुओं के स्वास्थ्य में सुधार होने से उनकी उत्पादकता में वृद्धि होगी, आर्थिक नुकसान में कमी आएगी और पशुपालकों की आय में सकारात्मक वृद्धि होगी। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम मध्य प्रदेश शासन के पशुपालन एवं डेयरी विभाग द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त है। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के माननीय कुलगुरु (प्रो.) डॉ. मनदीप शर्मा मुख्य अतिथि, संचालक विस्तार शिक्षा, डॉ. सुनील नायक विशेष अतिथि, अधिष्ठाता, डॉ. आर.के. शर्मा, अध्यक्ष एवं विभागाध्यक्ष, डॉ. गिरिधारी दास प्रशिक्षण समन्वयक के रूप में उपस्थित रहे। माननीय कुलगुरु डॉ. मनदीप शर्मा ने अपने संबोधन में कहा कि रोग का सटीक निदान ही आधा उपचार है यह कथन वैज्ञानिक समुदाय में व्यापक रूप से स्वीकृत है। उन्होंने बताया कि मानवों और पशुओं में किसी भी रोगजनक बीमारी की चिकित्सा एवं रोकथाम के लिए सबसे महत्वपूर्ण पहलू सटीक

निदान है, लेकिन पशु चिकित्सा क्षेत्र में यह अभी भी सबसे अधिक उपेक्षित विषयों में से एक है। बैक्टीरिया, वायरस, हेल्मिन्थ और हेमोप्रोटोजोआ आदि के कारण होने वाली संक्रामक बीमारियां ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गंभीर रूप से प्रभावित करती हैं। पालतू पशुओं में इन बीमारियों के नैदानिक और उप–नैदानिक दोनों रूप देखे जाते हैं, जिसमें उप–नैदानिक रूप अधिक प्रचलित होता है। इन उप–नैदानिक रोगों का निदान कठिन होता है, जिससे पशुओं को उनकी उच्चतम उत्पादकता स्थिति में बनाए रखना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। भले ही संक्रमित पशु को उचित पोषण और प्रबंधन प्राप्त हो, वे अपनी पूर्ण उत्पादकता प्राप्त नहीं कर पाते हैं। उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर होने के कारण वे अन्य संक्रामक रोगों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं। पशु चिकित्सक सामान्यतः नैदानिक रूपों की पहचान कर लेते हैं, लेकिन उप–नैदानिक रूपों की पहचान अधिक कठिन होती है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदेश भर के पशु चिकित्सा अधिकारियों के लिए एक सुनहरा अवसर साबित होगा। इससे न केवल पशु चिकित्सा क्षेत्र में विशेषज्ञता बढ़ेगी, बल्कि राज्य की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलेगी।

इस कार्यक्रम में संचालक अनुसंधान सेवाएं, डॉ. श्रीकांत जोशी, संचालक क्लीनिक्स, डॉ. अपरा शाही, संचालक पॉलीटेक्निक, डॉ. विश्वजीत रॉय, संचालक बायोटेक्नोलॉजी, डॉ. मोहन सिंह ठाकुर, परीक्षा नियंत्रक, डॉ. आर.व्ही. सिंह सहित पशु परजीवी विज्ञान विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी
ना.दे.प.चि.वि.वि., जबलपुर